हिन्दी साहित्य : समकालीन परिप्रेक्ष्य

संपादक
डॉ. प्रमोद कोवप्रत

राजपाल

₹ 185

ISBN : 9789350642771

प्रथम संस्करण : 2015 © प्रमोद कोवप्रत

HINDI SAHITYA : SAMKALEEN PARIPAREKSHYA

edited by Pramod Kovvaprath

मुद्रक : दीपिका एन्टरप्राइज़ेज, दिल्ली

राजपाल एण्ड सन्ज़

1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006

फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791

website : www.rajpalpublishing.com

e-mail : sales@rajpalpublishing.com

अनामिका की कविता : नारी-विमर्श

—डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

मैं एक दरवाज़ा थी/मुझे जितना पीटा गया,
मैं उतनी खुलती गई!/अंदर आए आने वाले तो देखा
चल रहा है एक बृहत्चक्र/चक्की रुकती है चरखा चलता है,
चरखा रुकता है तो चलती है कैंची-सुई, /गरज यह कि चलता ही रहता है
अनवरत कुछ न कुछ/...और अंत में सब पर फिर जाती है झाड़ू-
तारे बुहारती हुई / बुहारती हुई वृक्ष, पहाड़ और पत्थर—
सृष्टि के सब टूटे बिखरे कतरे जो/एक टोकरी में जमा करती जाती है
मन के कहीं भीतर।

अंतिम दशक की महिला कवयित्रियों में अनामिका का विशिष्ट स्थान है। मध्यवर्गीय नारी की ज़िन्दगी के संघर्ष और उसके मन की कशमकश की विविध संवेदनाओं को उन्होंने गहरी अनुभूति के साथ व्यक्त किया है। अनामिका की रचनाओं को पढ़ने से लगता है कि उन्होंने स्त्री जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों को किसी न किसी रूप में जाना, समझा, झेला और भोगा है, जिसमें नारी जीवन की पीड़ा, यातना, मजबूरी, संघर्ष आदि सबकुछ भरा पड़ा है। *कहती हैं औरतें* पुस्तक में 'स्त्री कविता' शीर्षक के अंतर्गत इन्होंने नारी लेखन के संक्षिप्त इतिहास का उल्लेख किया है। उनका कहना है कि "हमारी पूरी मिथकीय परम्परा में बस एक आर्य-स्त्री है जो बोलती है। वह स्त्री है पार्वती। महादेव चूँकि महादेव हैं, उन्होंने अपनी स्त्री को तर्क की, विमर्श की, ज़िद की स्वतंत्रता दे रखी है।"

उक्त संदर्भ में उनका मानना है अन्यथा "ऋतुमती होना, गर्भधारण करना, दूध पिलाना, बच्चे बड़े करना, पिटना, बलात्कार, गालियाँ, टूं-टां, खचर-पचर भावहीन, यांत्रिक, संभोग, नोच-खसोट...और भी तरह-तरह की हिकारतें चुपचाप झेलते चले जाना स्त्री-देह से जुड़े ऐसे बड़े सत्य हैं जिनकी अभिव्यक्ति की भाषा अब जाकर स्त्रियों ने साधी है।" कहने का आशय यह है कि सदियों से नारी सारे पारिवारिक

और सामाजिक अन्याय और अत्याचार को मौन होकर सहती रही है। 20वीं सदी के अंत में नारी-विमर्श की विचारधारा ने उसे कहने और लिखने का संबल प्रदान किया। परिणामस्वरूप इस दौर में महिला लेखिकाओं का रचनाक्रम में जो उफ़ान आया, इससे पहले कभी नहीं देखा गया था। उनमें अनामिका की रचनाएँ नारी-जीवन के विभिन्न तारों को झंकृत करती हैं।

बिहार, मुजफ़्फ़रपुर (1961) में जन्मी अनामिका का बचपन गाँव की गलियों में बीता। जहाँ उन्होंने लोक संस्कृति को बड़े करीब से भोगा और जीया है। सम्प्रति वे सत्यवती महाविद्यालय दिल्ली में अंग्रेज़ी का अध्यापन करती हुई हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रही हैं। अभी तक उनके *गलत पते की चिट्ठियां, बीजाक्षर, समय के शहर में, अनुष्टुप, कविता में औरत, खुरदुरी हथेलियां, दूब-धान* (कविता-संग्रह), *अवान्तर कथा, दस द्वारे का पिंजरा, तिनका तिनके पास* (उपन्यास) आलोचना एवं अनुवाद की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त आपको राजभाषा परिषद पुरस्कार (1987), भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार (1995), साहित्यकार सम्मान (1997), गिरिजाकुमार माथुर सम्मान (1998), परम्परा सम्मान (2001) और साहित्य सेतु सम्मान (2004) से सम्मानित किया गया है।

20वीं सदी के अंतिम दशक में पूँजी के वर्चस्व के कारण समाजवादी व्यवस्थाओं का विघटन हो रहा था। उपभोक्तावादी संस्कृति पनप रही थी, ऐसे में अनामिका अपनी जीवनानुभूतियों से संबंधित लोक संस्कृति के अनछुए रेशों को *बीजाक्षर* काव्यसंग्रह (1993) के माध्यम से निबेर रही थीं। उसमें उनकी चुप्पी में जीवन और समय के अनेक चिन्ह और सुख-दुःख के अनुभव भरे हुए हैं। प्रस्तुत संग्रह की 'समय', 'दांत' 'भूल-चूक', 'दिन', 'सांप-सीढ़ी', 'उड़नखटोला' आदि शीर्षक की रचनाओं में क्रमशः खून के लिए ग्लूकोज पर सांसें गिन रहा व्यक्ति, दाँत के टूटने और जमने की कौआ मामा की लोक कहावत, काव्य सर्जन जैसे कि 'कुछ है जो टूटेगा, /टूटेगा और फिर जमेगा/लेकिन जो टूटेगा-/जम पाएगा बिल्कुल वैसा ही?/इसकी ही चिंता है कविता 3, 'तेरी, न बहिनी की-/भूइयां की गलती वाली बचपन की यादें, बीतते हुए दिन, सांप-सीढ़ी का खेल और जीवन के सुखद अनुभवों को अनामिका ने प्रकृति के नाना रूपों और लोक कहावतों के द्वारा वाणी दी है।

कवयित्री 'ज़िद' 'झूठ' कविता में जहाँ अंतरिक्ष, तारे, अमूर्त झूठ आदि के संबंध में लोक और रहस्य की बात करती है वहीं पर 'स्त्री' कविता में मध्यवर्गीय नारी की कशमकश, टूटन एवं घुटन भरी ज़िन्दगी का खाका प्रस्तुत करती है।

बुझ चुकी है आखिरी चूल्हे की राख भी,
और वह
अपने ही वजूद की आँच के आगे

औचक हड़बड़ी में
खुद को ही सानती,
खुद को ही गूंधती हुई बार-बार
खुश है कि रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी।

"स्त्री-आंदोलन पितृसत्तात्मक समाज में पल रहे स्त्री-संबंधी पूर्वाग्रहों से पुरुषों की क्रमिक मुक्ति असंभव नहीं मानता। दोषी पुरुष नहीं, वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुषों को लगातार एक ही पाठ पढ़ाती है कि स्त्रियाँ उनसे हीनतर हैं, उनके भोग का साधन मात्र। आंदोलन की सार्थकता इसमें है कि वहाँ-वहाँ उंगली रखे जहाँ-जहाँ मानदंड दोहरे हैं, विरूपण, प्रक्षेपण, विलोपन (डिस्टॉर्शन, प्रोजेकक्शन, एबोलिशन) के तिहरे षड्यंत्र स्त्री के खिलाफ लगातार कारगर हैं जिनसे निस्तार मिलना ही चाहिए और सारा संघर्ष इसी बात का है। 'कंकडियाँ', 'ऊब', 'अंतःसत्वा', 'लोरी की चिड़ियाँ', 'जलेबा बुआ', 'इंतजार', 'प्रिय गोमती' आदि कविताओं में भी कवयित्री ने लोक, संसद, प्रकृति और नारी जीवन का मिला-जुला चित्र खींचा है।

अनामिका प्रस्तुत संग्रह की अन्य कविताओं में भी अपने समय से सीधे साक्षात्कार नहीं करती। वे परिवेशगत बदलावों से बेखबर अपनी अनुभूतियों का जाल बुनती हैं। उसमें उनका लोक और उनसे जुड़े हुए उनके निजी अनुभव व्यक्त हुए हैं। 'जाड़ा' कविता में लोक और प्रकृति के अद्भुत तालमेल से क्रांति का गुप्त स्वर भी मौजूद है—

जाड़ा खूब पड़ा है/शब्दों की छाती जकड़ गई है।
शुकर है कि बोरसी में कोयले हैं;/काले जितने टोटके,
और आग जल सकती है-/कभी भी, किसी आहट पर।

अनामिका की अन्य कविताओं में प्रियतम के अभाव की अनुभूतियाँ, धीरज, टूटने का सुखात्मक एवं दुःखात्मक परिणाम, आँखों से आँसू झर जाने के बाद नारी की मनःस्थिति के चित्र, गर्भपात की स्थिति में नारी मन की दशा, कैलेंडर और छीजती हुई जिन्दगी, मंसूबों और इरादों की चद्दर को बार-बार पीटता एवं अपने अंदर के हथौड़े की आवाज़ को सुनता हुआ इंसान, अच्छी पुस्तक का अध्ययन करते समय उसके कथ्य एवं विचारों में गोते लगाना आदि जैसी विविध अनुभूतियाँ मौज़ूद हैं।

कवयित्री ने अपनी अधिकांश कविताओं में मन के कोठर में संचित विविध अनुभूतियों को सांस्कृतिक, प्राकृतिक, पौराणिक एवं एन्द्रियबिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है। यहाँ एन्द्रिय बिंबों का एक उदाहरण—"माँ के नाखूनों से आती थी/बेसन की हल्की-सी खुशबू/आँखों से/'मानस' की जर्जर प्रति से उठती/हल्की-सी खनिज

गंध/गर्दन के पीछे से/पीले मकोय के फूलों की धमक!/बेकरी से अभी-अभी बाहर आई/गरम पावरोटी की भाप'' अनामिका ने पारिवारिक संवेदना की कई कविताएँ लिखी हैं। उनमें अपनी पुत्री ऋषिका के प्रति उनका लाड़-प्यार - ''माँ हूँ मैं, मेरे भरोसे ही/बीमार पड़ता है चाँद!/जाओ, अब दूध पिलाऊँगी मैं,/ सोओ कि इसे सुलाऊँगी मैं/उफ, करवट फेरो कि जगह करो,/मत खींचा-तानी बेवजह करो।''

'मनवीर कौर' ऐसी कतिपय कविताएँ हैं जहाँ अनामिका ने अपना आक्रोश भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यक्त किया है। यहाँ उनकी खींझ और सहानुभूति क्रमशः मंत्री की भ्रष्टता और मनवीत कौर की बेबसी पर प्रकट हुई है अन्यथा वे अपनी भोगी हुई लोक अनुभूतियों के जाल को गहरी संवेदना और भाषा और शिल्प के नए तेवर के साथ उधेड़ती और बुनती है।

बीजाक्षर के पाँच साल के बाद अनामिका का *अनुष्टुप* काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ, जिसके वक्तव्य में उन्होंने 'सृजन के क्षण', 'शब्द', कविता आदि के संबंध में गम्भीर और महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की है। ''सृजन के क्षण एक गहरे एकांत-बोध की उपज होते हैं। यह एकांत-बोध वितृष्णा या मोहभंग-जन्य क्षणिक मरघट-वैराग्य नहीं होता। यह होता है विडम्बनाओं की पहचान के बाद की निस्संग दृष्टि जो सृष्टि के पहले के महाशून्य से उपजी थी जब ईश्वर को भी अकेला-अकेला-सा लगने लगा था। शुरू में सिर्फ अंधेरा ही अंधेरा था, जल ही जल-फिर शब्द फूटे। शब्द अंधेरे से ही फूटते हैं। यही शब्दों की नियति है--प्रकारांतर से कविता की नियति। शब्द प्रकाश की वर्णमाला हैं--प्रकाश की पहचान का आदिसूत्र, बीज मंत्र।''

प्रस्तुत संग्रह की कविताओं में अनामिका का विचार, भाव, भाषा-शैली आदि का स्वरूप प्रखर और प्रगाढ़ हुआ है। 'ईश्वर' 'परमगुरु', 'लुप्तोपमा', 'बीच का समय', 'ढूँढना', 'एक्सपायर्ड मेडिसन', 'खोए पते', 'संयुक्त परिवार', 'छूटना' शीर्षक की कविताएँ विभिन्न भावबोध की हैं। इनमें से कतिपय कविताओं में शीर्षक, प्रसंग, अर्थ, भाव आदि के सूत्र ललित निबंधों की भांति बिखरे हुए से लगते हैं। 'एक्सपायर्ड मेडिसन' कविता में उक्त उलझाव दृष्टिगोचर होता है। 'ईश्वर' नामक कविता के शीर्षक से पाठक थोड़ा-सा झिझकेगा क्योंकि इसके अंदरूनी भाव और विचार रोमानी हैं।

जब उसने पहले-पहल मुझे छुआ/दरक गई घटाओं की छाती।
हूक की तरह उठी पछिया/और मुझे ऐसे सहेजकर समेटा उसने
जैसे आंधी में/कपड़े अंकवार लिए जाते हैं/अरगनी से खींचकर!

संकोच का पूरा व्याकरण उसे कंठस्थ था.../संयम के सब पाठ, सब वर्जनाएँ, सारी-की-सारी नीति-कथाएँ!/पौराणिक स्मृतियाँ डाल रही थीं हम पर अक्षत और दूर्वादल प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम, मर्यादा, संस्कृति, लज्जा, संकोच आदि भावों से गूँथी

हुई हैं। यहाँ "इतना न चमत्कृत हो बाले! अपने मन का उपकार करो,/मैं एक पकड़ हूँ जो कहती ठहरो कुछ सोच-विचार करो।" *कामायनी* का लज्जा सर्ग जीवंत हो उठता है। अनामिका ने ईश्वर से प्रथम मिलन और उसके बाद की संवेदनात्मक स्मृतियों का सुन्दर चित्रण किया है। एक तरफ उन्होंने जहाँ युवा मन के रोमांस को व्यक्त किया है वहीं पर 'बीच का समय' कविता में चालीस की उम्र के बाद उदास जीवन का चित्र भी खींचा गया है।

संग्रह के दूसरे शीर्षक *आधी दुनिया* की अधिकांश कविताएँ अनामिका के अनुभव संसार की हैं लेकिन उनमें 'प्रथम स्राव', 'विसंगति', 'कोहबर', 'हितोपदेश', 'चौका', 'अनुवाद', 'दरवाज़ा', 'भिन्न', 'अयाचित', 'पहली पेंशन' आदि महत्त्वपूर्ण हैं। किसी लड़की के प्रथम स्राव के समय कुतूहल, दुःख, आनंद, घबराहट आदि का उसके अंदर संश्लिष्ट रूप उभरता है। अनामिका ने उस समय लड़की की मनोभावनाओं, कल्पनाओं, भावभंगिमाओं का 'प्रथम स्राव' कविता में सुंदर चित्र खींचा है, जिसमें उसकी संवेदनाओं का एक-एक टुकड़ा प्रथम स्राव की भांति निखर उठा है। 'विसंगति' और 'कोहबर' कविता में क्रमशः दो लड़कियों की हँसी के माध्यम से बचपन के दिनों की स्मृतियों, घटनाओं और प्रसंगों का तथा दुल्हा-दुल्हन का एक-दूसरे को देखने और कालान्तर में प्रेम एवं संघर्ष का लोक सांस्कृतिक जीवन का संवेदनात्मक बिम्ब खींचा गया है।

'चौका' और 'अनुवाद' कविता में चूल्हा-चाकी में जलती और पिसती हुई स्त्री का मार्मिक चित्रण किया गया है। वह आजीवन अपनी वजूद की आँच में बनती, बिगड़ती और पकती रहती है। "बुझ चुकी है आखिरी चूल्हे की राख भी/ और वह/अपने ही वजूद की आँच के आगे! औचक हड़बडी में/खुद को ही सानती/खुद को ही गूँधती हुई बार-बार/खुश है कि रोटी बेलती है जैसे पृथ्वी।" 'अनुवाद' कविता आपस की बढ़ती हुई दूरी और घर-गृहस्थी के जंजाल की ओर इंगित करती है। कवयित्री सुबह से शाम तक पूरे घर का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में करना चाहती है लेकिन वह नहीं कर पाती। "अभी मुझे घर की उतरनों का/अनुवाद करना होगा/जल की भाषा में/फिर जूठी प्लेटों का/किसी श्वेत पुष्प की पँखुड़ियों में/अनुवाद करूँगी मैं।" मैनेजर पाण्डेय का मन्तव्य है—"अनामिका की काव्य-दृष्टि में एक प्रकार की भाषिक सजगता मिलती है, जो उनकी सामाजिक संवेदना को एक सीमा तक संचालित भी करती है। इसका अच्छा उदाहरण है 'अनुवाद' नाम की कविता। उनकी हाल की कविताओं में काव्य संवेदना क्रमशः व्यापक हुई है और सामाजिक सरोकारों का विस्तार भी हुआ है।"

'भिन्न' कविता नारी-विमर्श का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है। इसमें नारी के प्रति पुरुष की परंपरागत सोच, दृष्टि एवं उसकी मानसिकता स्पष्ट रूप से झलकती है। उसने कभी भी नारी को पूर्ण इकाई के रूप में माना ही नहीं। अगर कहीं उसका

माथा उसके अधोभाग से भारी पड़ गया तो वह तिलमिला जाता है। उसने अपनी पुरुष प्रधान-दृष्टि और अहं के कारण उसके माथे की प्रतिभा को स्वीकार ही नहीं किया। ''क्या माथा अधोभाग से भारी होना/ इतना अनुचित है—मेरे मालिक, मेरे आका?/क्या इससे मेरी बढ़ जाती है दुरूहता?/कितने बरस अभी और रहेंगे आप/इसी पाँचवी कक्षा के बालक की मनोदशा में।''

'अयाचित', 'रिश्ता', 'होमवर्क', 'ङ' आदि कविताएँ किसी न किसी रूप में घर-गृहस्थी में पिसती हुई मध्यवर्गीय नारी के अभाव, दुःख-दर्द, आर्थिक-संकट, जीवन-संघर्ष आदि का बयान करती हैं। 'ढोल' और 'कूड़ा बीनते बच्चे' कविता अनामिका की प्रगतिशील दृष्टि को उजागर करती है। 'चुटपुटिया बटन' अतीत के आपसी सदविचारों, निश्च्छल प्रेम, समानता के भावों आदि मानवीय मूल्यों में आज हो रहे परिवर्तनों को कवयित्री ने प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त किया है। ''ऊँच-नीच के दर्शन में उनका कोई विश्वास नहीं था! /समकक्षता के वे कायल थे!/फँसते थे, न फँसाते थे—चुपचाप सट जाते थे।''

परमानंद श्रीवास्तव का मानना है—''अनामिका की कविता 'इच्छाएँ' क्या स्त्री-मुक्ति का संदेश है? या संदेश में अर्थवक्रता के न्याय से कोई प्रच्छन्न डर-उड़ान भरने और बीच राह कहीं अटक जाने का! डर, त्रास, दुख, यातना के अनुभव अनामिका के यहाँ बहुत हैं। उसी अनुपात में जीवट भी! इच्छाओं की लय भी होती हैं अलग-अलग/कुछ सितार के झाले-सी/सीधा उठती हैं अठगुन में ही/कुछ विलंबित में उठती हैं/अचानक किसी सुर से/(सृष्टि के पहले अलाप की तरह)''

'गंध' कविता में जहाँ बस के गणतंत्र का सुन्दर कौतूहलपूर्ण बिंबात्मक चित्र खींचा गया है वहीं पर 'साध्य' में गणित के साध्य के माध्यम से 'माँ' की वात्सल्य संवेदना को प्रकट किया गया है। संग्रह के अंत में 'बहिणाबाई : इक्कीसवीं सदी' लंबी कविता तीन दृश्यों की नाटकीय शैली में लिखी गई है। मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है—''मराठी की भक्त कवयित्री बहिणाबाई पर लिखी कविता में आज की स्त्री के जीवन-संघर्ष और स्वाधीनता की बेचैनी से जुड़ती दिखाई देती है। इस परम्परा बोध से स्त्री चेतना का विस्तार होता है। अनामिका की कविताओं में कहीं-कहीं विडम्बना के गहरे बोध के साथ व्यंग्य की चेतना भी है जिससे काव्यार्थ व्यापक बनता है और प्रभावकारी भी। उनकी इधर की कविताओं में भाषा की सहजता बढ़ी है क्योंकि अब उनकी कविता मध्यवर्गीय जीवन के दायरे से निकलकर उनकी ओर जाने लगी है : जो मिल कर लोहा गलाते हैं /तेल पेरते/लकड़ियाँ चीरते हैं/कड़ी धूप में/बजरियाँ कूटते हैं/और चुपचाप सडकें बनाते हैं/इस ध्रुव से उस ध्रुव तक।''

बीजाक्षर एवं *अनुष्टुप* की कविताएँ अनामिका के लोक जीवनानुभवों पर आधारित स्त्री के दुःख-दर्द, संत्रास, पीड़ा, संघर्ष, साहस, जीवट की अभिव्यक्ति है। इन्होंने नारी जीवन एवं उससे जुड़ी तमाम विसंगतियों और विडंबनाओं को बड़ी महीन

संवेदना के साथ व्यक्त किया है। यहाँ एक ठोस वास्तविक-स्त्री की दुनिया मौजूद है। इनकी कविताओं में प्रकृति और लोक अपनी पूर्णता में विद्यमान है। अनामिका की भाषा विचारों और भावों के अनुकूल है। प्रतीकों, बिंबों और लोकमुहावरों का सुंदर प्रयोग हुआ है। अंग्रेज़ी साहित्य का अध्ययन और अध्यापन के कारण जगह-जगह पर उसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अंतिम दशक के बाद *कविता में औरत, कहती हैं औरतें* (संपादित) *खुरदुरी हथेलियाँ, दूब-धान* काव्यसंग्रह की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। विवेच्य विषय के अनुसार इनकी कविताओं का उल्लेख नहीं हुआ है।